

NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

समृद्धि के लिए भारत और हिंद-प्रशांत
आर्थिक ढांचा (IPEF)

www.nextias.com

समृद्धि के लिए भारत और हिंद-प्रशांत आर्थिक ढांचा (IPEF)

सन्दर्भ

- हाल ही में, भारत ने अन्य IPEF देशों के साथ स्वच्छ अर्थव्यवस्था समझौते, निष्पक्ष अर्थव्यवस्था समझौते एवं IPEF पर व्यापक समझौते के लागू होने का स्वागत किया, तथा आर्थिक सहयोग को अधिक गंभीर करने और चल रहे सहयोग के माध्यम से ठोस लाभ प्रदान करने के महत्वपूर्ण अवसरों पर बल दिया।

समृद्धि के लिए हिंद-प्रशांत आर्थिक ढांचे (IPEF) के बारे में

- IPEF को 2022 में टोक्यो, जापान में लॉन्च किया गया था, जिसमें 14 देश शामिल हैं - ऑस्ट्रेलिया, ब्रुनेई, फिजी, भारत, इंडोनेशिया, जापान, कोरिया गणराज्य, मलेशिया, न्यूजीलैंड, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, वियतनाम और USA, जो सामूहिक रूप से वैश्विक GDP का 40% और वैश्विक व्यापार का 28% भाग हैं।
- यह क्षेत्र में विकास, आर्थिक स्थिरता और समृद्धि को आगे बढ़ाने के लक्ष्य के साथ भागीदार देशों के बीच आर्थिक जुड़ाव तथा सहयोग को मजबूत करना चाहता है।

IPEF के प्रमुख स्तंभ

- व्यापार (स्तंभ I):** यह सदस्य देशों के बीच व्यापार संबंधों को बढ़ाने और व्यापार में बाधाओं को कम करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य अधिक समावेशी और निष्पक्ष व्यापार वातावरण बनाना है।
- आपूर्ति शृंखला (स्तंभ II):** लचीली और सुरक्षित आपूर्ति शृंखला सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है, विशेषकर वैश्विक घटनाओं के कारण होने वाले व्यवधानों के मद्देनजर। यह आपूर्ति शृंखला नेटवर्क को मजबूत करने और एकल स्रोतों पर निर्भरता कम करने का प्रयास करता है।
- स्वच्छ अर्थव्यवस्था (स्तंभ III):** यह सतत विकास, स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने और जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने पर बल देता है। यह भारत के हरित अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के घरेलू लक्ष्यों के साथ संरेखित है।
- निष्पक्ष अर्थव्यवस्था (स्तंभ IV):** इसका उद्देश्य भ्रष्टाचार विरोधी उपायों और श्रम अधिकारों को बढ़ावा देने सहित निष्पक्ष आर्थिक प्रथाओं को बढ़ावा देना है।

IPEF का रणनीतिक महत्व

- चीन के प्रभाव का प्रतिकार:** IPEF को इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव का सामना करने के लिए एक रणनीतिक कदम के रूप में देखा जाता है। आर्थिक संबंधों को मजबूत करने और निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं को बढ़ावा देने के माध्यम से, इस ढांचे का उद्देश्य एक संतुलित और समावेशी आर्थिक वातावरण बनाना है।
- आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करना:** IPEF प्रमुख इंडो-पैसिफिक अर्थव्यवस्थाओं के बीच सहयोग को बढ़ावा देता है, जिससे विश्व के सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक में आर्थिक एकीकरण मजबूत होता है।
- पारंपरिक व्यापार ब्लॉकों का विकल्प:** IPEF एक गैर-पारंपरिक आर्थिक ढांचे के रूप में कार्य करता है, जो RCEP (क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी) जैसे क्षेत्रीय व्यापार समझौतों का विकल्प प्रदान करता है।

- **महत्वपूर्ण आर्थिक चुनौतियों का समाधान:** इसमें स्वच्छ अर्थव्यवस्था समझौता और निष्पक्ष अर्थव्यवस्था समझौता जैसे समझौते शामिल हैं, जो सतत विकास, निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं और पारदर्शी आर्थिक शासन के मुद्दों को संबोधित करते हैं।
- **तकनीकी और बुनियादी ढाँचा सहयोग को सुविधाजनक बनाना:** डिजिटल व्यापार और स्वच्छ ऊर्जा जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करके, IPEF प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और बुनियादी ढाँचे के विकास को सुविधाजनक बनाता है, जिससे इंडो-पैसिफिक में सतत विकास को बढ़ावा मिलता है।

IPEF में भारत की रणनीतिक भूमिका

- **आर्थिक एकीकरण:** अमेरिका को भारत के व्यापारिक निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जो 2018 में 54.3 बिलियन डॉलर से 50% से अधिक बढ़कर 2023 में 83.8 बिलियन डॉलर हो गया है।
 - यह IPEF ढाँचे के तहत आगे आर्थिक एकीकरण और सहयोग की क्षमता पर प्रकाश डालता है।
- **क्षेत्रीय प्रभाव को संतुलित करना:** IPEF में भारत की भागीदारी चीन के क्षेत्रीय आर्थिक प्रभाव को संतुलित करने की रूपरेखा की क्षमता को मजबूत करती है। भारत की भूमिका आर्थिक स्थिरता और सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध एक वैकल्पिक क्षेत्रीय भागीदार प्रदान करके छोटी अर्थव्यवस्थाओं को आश्वस्त करती है।
- **आपूर्ति श्रृंखला लचीलेपन को मजबूत करना:** भारत की विनिर्माण क्षमताएं, विशेष रूप से उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजनाओं और मेक इन इंडिया जैसी पहलों के माध्यम से, पीएलआई आईपीईएफ के अंदर लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं के निर्माण में योगदान करती हैं।
- **स्वच्छ ऊर्जा और सतत प्रथाओं में नेतृत्व:** अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) जैसी पहलों के माध्यम से नवीकरणीय ऊर्जा, विशेष रूप से सौर ऊर्जा में वैश्विक नेता के रूप में, भारत IPEF के स्वच्छ अर्थव्यवस्था स्तंभ में योगदान देता है।
- **डिजिटल और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देना:** भारत की तेजी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था और IT तथा डिजिटल सेवाओं में विशेषज्ञता IPEF की डिजिटल और तकनीकी सहयोग पहलों में मूल्य जोड़ती है।
 - डिजिटल इंडिया पर अपने फोकस के साथ, भारत डिजिटल बुनियादी ढाँचे, साइबर सुरक्षा और डेटा गवर्नेंस जैसे क्षेत्रों में अग्रणी हो सकता है, जिससे क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाओं को लाभ होगा और सुरक्षित, समावेशी डिजिटल विकास को बढ़ावा मिलेगा।
- **हिंद-प्रशांत साझेदारों के साथ रणनीतिक गठबंधन का निर्माण:** IPEF आसियान, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और अन्य क्षेत्रीय साझेदारों के साथ भारत के संबंधों को मजबूत करता है, रणनीतिक साझेदारी को बढ़ाता है और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में इसके प्रभाव को बढ़ाता है।
- IPEF में भारत की भागीदारी इसकी एक्ट ईस्ट नीति का पूरक है और क्वाड तथा अन्य बहुपक्षीय जुड़ावों के साथ संरेखित है, जिससे इसकी क्षेत्रीय उपस्थिति बढ़ेगी।

कार्यान्वयन में प्रमुख चुनौतियाँ

- **विविध आर्थिक हित:** IPEF में अलग-अलग आर्थिक प्राथमिकताओं और विकास स्तरों वाले देश शामिल हैं, जिससे सामान्य लक्ष्यों और मानकों पर सामंजस्य बिठाना मुश्किल हो जाता है।

- **बाजार पहुँच प्रतिबद्धताओं का अभाव:** पारंपरिक व्यापार समझौतों के विपरीत, IPEF में टैरिफ कटौती जैसी बाजार पहुँच पर प्रतिबद्धताएँ शामिल नहीं हैं। यह आर्थिक संबंधों को गहरा करने में इसकी अपील और प्रभावशीलता को सीमित करता है।
- **राजनीतिक और विधायी बाधाएँ:** यू.एस. में, विदेशी वाणिज्य को विनियमित करने के लिए संवैधानिक अधिकार को देखते हुए, IPEF में कांग्रेस की भूमिका के बारे में चिंताएँ हैं। प्रशासन के दृष्टिकोण ने समझौतों की स्थायित्व और प्रवर्तनीयता के बारे में प्रश्न उठाए हैं।
- **कार्यान्वयन और प्रवर्तन:** बाध्यकारी विवाद समाधान तंत्रों के बजाय सहयोग पर ढांचे की निर्भरता प्रवर्तन को चुनौतीपूर्ण बना सकती है। यह स्वच्छ अर्थव्यवस्था और निष्पक्ष अर्थव्यवस्था समझौतों के लिए विशेष रूप से सच है, जो सहयोग तथा स्वैच्छिक अनुपालन पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- **डेटा स्थानीयकरण और गोपनीयता मुद्दे:** डेटा स्थानीयकरण, पारदर्शिता और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा आवश्यकताओं जैसे विवादास्पद मुद्दे महत्वपूर्ण चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं। इन मामलों पर वैश्विक सहमति प्राप्त करना महत्वपूर्ण लेकिन कठिन है।
- **भू-राजनीतिक तनाव:** IPEF को क्षेत्र में चीन के प्रभाव के प्रतिकार के रूप में देखा जाता है। यह भू-राजनीतिक आयाम वार्ता और कार्यान्वयन को जटिल बना सकता है, क्योंकि देशों को प्रतिस्पर्धी हितों के दबाव का सामना करना पड़ सकता है।

निष्कर्ष और आगे की राह

- समृद्धि के लिए हिंद-प्रशांत आर्थिक ढांचा भारत को इस क्षेत्र में अपने आर्थिक और रणनीतिक संबंधों को बढ़ाने का एक अद्वितीय अवसर प्रदान करता है, क्योंकि यह लगातार विकसित हो रहा है, वैश्विक अर्थव्यवस्था पर ढांचे के प्रभाव को आकार देने में भारत की सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण होगी।
- IPEF के स्तंभों का लाभ उठाकर, भारत हिंद-प्रशांत में एक लचीला, सतत और निष्पक्ष आर्थिक वातावरण बनाने में योगदान दे सकता है, जिससे अंततः सभी सदस्य देशों के लिए समृद्धि को बढ़ावा मिलेगा।
- फिर भी, ढांचे के प्रति भारत की प्रतिबद्धता हिंद-प्रशांत क्षेत्र में लचीलेपन और सतत विकास की दिशा में एक साहसिक कदम का संकेत देती है।

Source: TH



दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न. भारत अपनी आर्थिक वृद्धि को बढ़ाने, क्षेत्र में अपनी रणनीतिक स्थिति को बढ़ाने और अपनी घरेलू विकासात्मक चुनौतियों का समाधान करने के लिए इंडो-पैसिफिक आर्थिक ढांचे (IPEF) का प्रभावी ढंग से लाभ कैसे उठा सकता है?